प्राकृत पाठ्यक्रम के अंतर्गत

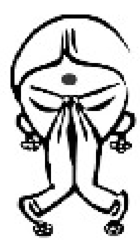
पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग-1

लेखक

मुनि 108 श्री प्रणम्यसागर जी महाराज



जय जिणिंद

प्रकाशक

आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति

109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन (476010)

कृति :
पाइय सिक्खा - भाग 1
(प्राकृत शिक्षा)

आशीर्वाद :
आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज

कृतिकार :
मुनि 108 श्री प्रणम्यसागर जी महाराज

संयोजन :
डॉ. अजेश जैन शास्त्री, रेवाड़ी

सहयोग :
श्री ऋषभ जैन शास्त्री, रेवाड़ी

प्रति : **3000**
संस्करण - तृतीय

मूल्य : **30/-**

प्राप्ति स्थान :
डॉ. अजेश जैन शास्त्री, रेवाड़ी - 9416426659
शैलेन्द्र शाह, उज्जैन - 09425092483, 09406881001
आर्हत विद्या प्रकाशन, गोटेगांव - 09425837476

प्रकाशक :
आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति
109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन (476010)

मुद्रक
आरसी प्रैस, नई दिल्ली # 9871196002

पाइय सिक्खा

भाग 1

विषयानुक्रमणिका

आत्मकथ्य/पाथेय

जैन परम्परानुसार अवसर्पिणी काल के इस पंचम युग में जहाँ एक ओर भौतिक एवं वैज्ञानिक सम्पन्नता का दिग्दर्शन हो रहा है, वहीं अशान्त एवं आक्रान्त मानव समाज कर्त्तव्यों एवं मूल्यों से विमुख होता जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज में मूल्यों की स्थापना हो, वैयक्तिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर मानवता का विकास हो, अशांत समाज के लिए आर्षपुरुषों की वाणी का सदुपयोग करने का अवसर मिले। आज जिन-शासन में महावीर की देशना फलित हो रही है। उनकी वाणी आगम के रूप में विद्यमान है। हम सभी उस आगम रूप जिनवाणी का स्वाध्याय करके आत्मकल्याण कर सकें, यही मंगल कामना है।

आज महावीर की देशना जिन आगम ग्रन्थों के रूप में प्राप्त हो रही है उनका स्वाध्याय एवं अध्ययन भाषा की दुरूहता के कारण सम्भव नहीं है। प्राकृत भाषा में रचित इन आगमों के अध्ययन एवं स्वाध्याय के लिए प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी आवश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर **प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम** का निर्माण किया गया है जो **प्राकृत शिक्षा के चार भागों** में पाठकों के हाथ में है। जिसके माध्यम से जनसामान्य एवं जिन-उपासकों के अन्दर भाषा की जानकारी के साथ-साथ स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ सकेगी। इसी उद्देश्य को लेकर सामाजिक स्तर पर, पारिवारिक स्तर पर और वैयक्तिक स्तर पर स्वाध्याय की रुचि जागृति की जा सके, जगह-जगह **प्राकृत विद्या पाठशाला** स्थापित की जा रही हैं। इस पाठशाला के निमित्त से प्राकृत भाषा की जानकारी के लिए रचित इस कृति में क्रमशः प्राकृत के संज्ञा-सर्वनाम शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूपों और प्राकृत के सामान्य नियमों की जानकारी तथा प्राकृत अभ्यास रचना के प्रयोग 'प्राकृत शिक्षा' में दिये गये हैं।

मंगल-कामना है कि समाज के सभी धर्मानुरागी श्रावक-श्राविकाएं इस पाठशाला में आकर इसे समृद्ध करें और अपने आपको स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जोड़े रखें।

अस्तु मंगलभावना सहित.......

वर्षायोग - 2017
रेवाड़ी (हरियाणा)

- मुनि प्रणम्य सागर

प्राकृत भाषा का ऐतिहासिक परिचय

– मुनि प्रणम्यसागर

- ❖ भारत के प्राचीन ग्रन्थ प्राकृत भाषा में निबद्ध हैं। श्रमण परम्परा के पोषक वैदिक युगीन व्रात्य आदि प्राचीन प्राकृत का व्यवहार करते थे।
- ❖ वेद छान्दस् में लिखे गये हैं। उस समय जन सामान्य के बीच व्यवहार की भाषा का नाम प्राकृत कहा जाता था।
- ❖ श्रमण परम्परा के महापुरुष भगवान् महावीर ने भी अपने उपदेशों की भाषा जन–बोली प्राकृत को बनाया।
- ❖ गणधर और आचार्यों की परम्परा द्वारा स्मरण के आधार पर महावीर के उपदेशों को द्वादशांग श्रुत के रूप में प्राकृत में सुरक्षित रखा गया।
- ❖ उसी श्रुतांश को दक्षिण भारत के दिगम्बर जैनाचार्यों ने स्वतन्त्र ग्रन्थों की रचना कर और उसे ईसा की प्रथम शताब्दी में लिपिबद्ध कर सुरक्षित किया। दिगम्बर परम्परा के अनुसार ई.पू. प्रथम शताब्दी में गुणधराचार्य ने कसायपाहुड नामक ग्रन्थ की रचना शौरसैनी प्राकृत में 180 गाथा सूत्रों में की।
- ❖ आचार्य धरसेन की प्रेरणा से आचार्य पुष्पदन्त एवं मुनि श्री भूतबलि (ईसा के 73 से 87 वर्ष के लगभग) ने षट्खण्डागम नामक ग्रन्थ की शौरसैनी प्राकृत में रचना की और ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुत पंचमी) को उसकी लिखित ताड़पत्रीय प्रति की संघ ने पूजा की। ग्रन्थलेखन का यह क्रम निरन्तर चलता रहा।
- ❖ यही शौरसैनी प्राकृत तब दक्षिण से उत्तर और पूर्व से पश्चिम तक सम्पर्क भाषा प्राकृत के रूप में प्रसिद्ध थी।
- ❖ श्वेताम्बर परम्परा में आगम साहित्य में अर्धमागधी प्राकृत का तथा परवर्ती धार्मिक कथा–ग्रन्थों और व्याख्या साहित्य के लिए महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग किया गया है।
- ❖ दिगम्बर परम्परा ने धार्मिक कथा और काव्य ग्रन्थों के लिए प्राकृत से विकसित अपभ्रंश भाषा का प्रयोग किया।
- ❖ इस प्रकार भगवान् महावीर के बाद लगभग दो हजार वर्षों तक जैन ग्रन्थों के साथ शौरसैनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री आदि प्राकृतों का सम्बन्ध बना रहा है। प्राकृत जैन परम्परा की मूल भाषा है।
- ❖ जैनाचार्यों ने प्राकृत भाषा के साथ भारत की अन्य प्रायः सभी भाषाओं में अपना साहित्य लिखा है।
- ❖ प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति करते समय **'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्'** अथवा **'प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्'** अर्थ को स्वीकार करना चाहिये। जन सामान्य की स्वाभाविक भाषा प्राकृत है।
- ❖ प्राचीन विद्वान् नमिसाधु के अनुसार प्राकृत शब्द का अर्थ है–व्याकरण आदि संस्कारों से रहित लोगों का स्वाभाविक वचन–व्यापार। उससे उत्पन्न अथवा वही वचन–व्यापार प्राकृत है।
- ❖ प्राक्+कृत पद से प्राकृत शब्द बना है, जिसका अर्थ है पहिले किया गया। जैन धर्म के द्वादशांग ग्रन्थ पहिले किये गये हैं। अतः उनकी भाषा प्राकृत है, जो बालक, महिला आदि सभी को सुबोध है।

- ❖ प्राकृत के देश–भेद एवं संस्कारित होने के अवान्तर विभेद हुए हैं। यथा–शौरसेनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री, मागधी, अपभ्रंश आदि।

- ❖ आठवीं शताब्दी के कवि वाक्पतिराज ने कहा है कि–सभी भाषाएँ इसी (जनबोली प्राकृत) से निकलती हैं और इसी को प्राप्त होती हैं। जैसे जल बादल के रूप में समुद्र से निकलता है और समुद्र में ही नदियों के रूप में आ जाता है। यथा–

सयलाओ इमं वाया बिसन्ति एत्तो य णेन्ति वायाओ।
एन्ति समुद्दं च्चिय णेन्ति सायराओ च्चिय जलाइं।।

- ❖ महावीर और बुद्ध ने जनता के सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्राकृत भाषा का आश्रय लिया, जिसके परिणाम स्वरूप दार्शनिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि विविधताओं से परिपूर्ण आगमिक एवं त्रिपिटक साहित्य के निर्माण की प्रेरणा मिली।

- ❖ महापुरुषों ने प्राकृत भाषा के माध्यम से तत्कालीन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्ति की ध्वजा लहरायी थी। प्राचीन भारत में प्राकृत मातृभाषा के रूप में दूर–दूर के विशाल जन समुदाय को आकर्षित करती थी।

- ❖ विद्वानों ने कहा है कि जिस प्रकार वैदिक भाषा को आर्य संस्कृति की भाषा होने का गौरव प्राप्त है, उसी प्रकार प्राकृत भाषा को **आगम भाषा/आर्य भाषा** होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है।

- ❖ सम्राट अशोक के समय में प्राकृत जन–भाषा के रूप में इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे **राज्यभाषा** होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है। ई.पू. 300 से लेकर 400 ईस्वी तक इन सात सौ वर्षों में लगभग दो हजार अभिलेख प्राकृत में लिखे गये हैं।

- ❖ खारबेल द्वारा हाथी गुम्फा में प्राकृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख में अपने देश भारत वर्ष का नाम **'भरध-वस'** सर्वप्रथम प्राचीनतम उल्लेख के रूप में मिलता है।

- ❖ वैदिक युग में प्राकृत भाषा **लोकभाषा** थी। उसमें रूपों की बहुलता एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति थी। महावीर युग तक आते–आते प्राकृत ने अपने को इतना समृद्ध और सहज किया कि वह अध्यात्म और सदाचार की भाषा बन सकी।

- ❖ साहित्य भाषा के रूप में महाकवि हाल ने प्रथम सदी में प्राकृत भाषा के कवियों की गाथाओं का गाथाकोश (गाथासप्तशती) तैयार किया, जो ग्रामीण जीवन और सौन्दर्य–चेतना की प्रतिनिधि ग्रन्थ है।

- ❖ प्राकृत भाषा के इस जनाकर्षण के कारण कालिदास आदि महाकवियों ने अपने नाटक ग्रन्थों में प्राकृत भाषा बोलने वाले पात्रों को प्रमुख स्थान दिया। इससे स्पष्ट है कि समाज में अधिकांश लोग दैनिक जीवन में प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे।

- ❖ अभिज्ञानशाकुन्तलं की ऋषिकन्या शकुन्तला, नाटककार भास की राजकुमारी वासवदत्ता, शूद्रक की नगरवधू वसन्तसेना तथा प्रायः सभी नाटकों में राजा के मित्र, कर्मचारी आदि पात्र प्राकृत भाषा का प्रयोग करते देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राकृत जनसमुदाय की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी।

- ❖ नाटकों में स्त्रियाँ शौरसैनी प्राकृत में ही बात करती हैं। महाकवि शूद्रककृत 'मृच्छकटिकम्' नाटक में विदूषक कहता है– दो वस्तुयें हास्य उत्पन्न करती हैं। प्रथम वस्तु–स्त्री के द्वारा संस्कृत भाषा का प्रयोग तथा दूसरी वस्तु–पुरुष द्वारा धीमें स्वर में गायन।

- ❖ प्राकृत में जो आगम ग्रन्थ, व्याख्या साहित्य, कथा एवं चरितग्रन्थ आदि लिखे गये है उनमें काव्यात्मक सौन्दर्य और मधुर रसात्मकता का समावेश है।
- ❖ काव्य की प्रायः सभी विधाओं–महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, चरित, कथा आदि को प्राकृत भाषा ने समृद्ध किया है।
- ❖ अनेक प्राकृत रचनाएँ अजैन कवियों/विद्वानों द्वारा लिखी गयी हैं।
- ❖ प्राकृत एवं अपभ्रंश की लाखों पाण्डुलिपियाँ देश के ग्रन्थभण्डारों में सुरक्षित हैं, जो देश की धरोहर हैं।
- ❖ प्राकृत भाषा की मधुरता और काव्यात्मकता का प्रभाव है कि भारतीय काव्यशास्त्रियों ने काव्य के अपने लक्षण–ग्रन्थों में प्राकृत की सैंकड़ों गाथाओं के उद्धरण दिये हैं। देश के अनेक सुभाषितों को उन्होंने इस बहाने सुरक्षित किया है।
- ❖ डॉ. पी. डी. गुणे ने स्वीकार किया है कि प्राकृतों का अस्तित्व वैदिक बोलियों के साथ–साथ विद्यमान था। उन्हीं से परावर्ती साहित्यिक भाषाओं का विकास हुआ है।
- ❖ डॉ. हरदेव बाहरी ने अपनी पुस्तक– **'प्राकृत भाषा और उसका साहित्य'** में कहा है कि वेद कालीन प्राकृतों से संस्कृत और विभिन्न प्राकृतों का विकास हुआ है।
- ❖ डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तृतीय युगीन प्राकृत अपभ्रंश को प्राचीन हिन्दी कहा है। यह अपभ्रंश आधुनिक भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी है।
- ❖ 'हिन्दी' जिस भाषा के विशिष्ट दैशिक और कालिक रूप का नाम है, भारत में इसका प्राचीनतम रूप प्राकृत है।
- ❖ आधुनिक युग में प्राकृत भाषाओं का व्याकरण लिखने वाले जर्मन विद्वान् हैं– डॉ. पिशेल, इससे जर्मनी में प्राकृत अध्ययन खूब विकसित हुआ।
- ❖ प्राकृत कवि के ये उद्‌गार प्रेरणादायक हैं कि–''प्राकृत काव्य के लिये नमस्कार है और उनके लिए भी जिनके द्वारा प्राकृत काव्य रचा गया है। उनको भी हम नमस्कार करते हैं, जो प्राकृत काव्य को पढ़कर उसे हृदयंगम करते हैं''। यथा–

पाइयकव्वस्स नमो, पाइयकव्वं च निम्मियं जेण।
ताहं चिय पणमामो, पढिऊण य जे वि याणन्ति।।

- ❖ आचार्य राजशेखर ने कर्पूरमंजरी को शौरसैनी प्राकृत में लिखा और उसमें कहा है कि संस्कृत के काव्य पुरुषों की तरह कठोर एवं प्राकृत के काव्य महिलाओं की तरह कोमल भाषा वाले हैं।
- ❖ प्राकृत भाषा का अध्ययन न केवल भारत देश में अपितु विदेशों में भी हो रहा है। आज भी SOAS लंदन यूनिवर्सिटी में प्राकृत भाषा का अध्ययन कराया जाता है।
- ❖ **ऐसी भारतीय भाषाओं की आधारभूत जन भाषा प्राकृत एवं उसके साहित्य के संरक्षण, शिक्षण, शोध एवं प्रचार–प्रसार के लिए प्रत्येक देशवासी, संस्था, सरकार, नेता, समाजसेवी, शिक्षक को सक्रिय सहयोग एवं संबल प्रदान करना चाहिये।**

पाठ-1

पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)

सर-वेंजण (स्वर-व्यंजन)

वण्ण (वर्ण) - वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई हैं। वर्ण को ही अक्षर कहा जाता है।

वण्णमाला (वर्णमाला) - वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

वण्ण (वर्ण)

सर वण्ण (स्वर वर्ण) | वेंजण वण्ण (व्यंजन वर्ण)

स्वर वर्ण - वे वर्ण जिनका उच्चारण करने में दूसरे वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती उन्हें स्वर वर्ण कहते हैं। प्राकृत में कुल 10 स्वर होते हैं।

सरवण्ण - 10 (स्वर वर्ण)

हृस्स सर (ह्रस्व स्वर)-5	दिग्घ सर (दीर्घ स्वर) - 5
अ, इ, उ, ए, ओ	आ, ई, ऊ, ए, ओ

प्राकृत भाषा में ऐ तथा औ स्वर भी ए तथा ओ के रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं।

व्यंजन वर्ण - व्यंजन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। प्राकृत में व्यंजनों की संख्या 29 है-

वेंजण (व्यंजन)

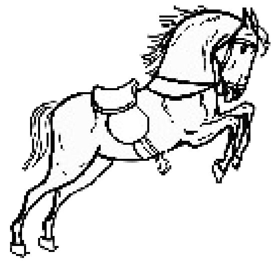
वर्गीय व्यंजन-23 (स्पर्श व्यंजन)

कवर्ग	-	क, ख, ग, घ
चवर्ग	-	च, छ, ज, झ
टवर्ग	-	ट, ठ, ड, ढ, ण
तवर्ग	-	त, थ, द, ध, न
पवर्ग	-	प, फ, ब, भ, म

अवर्गीय व्यंजन-6

अन्तस्थ व्यंजन-4	उष्माक्षर-2
य, र, ल, व	स, ह

पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)



अ - अस्स (घोड़ा)



आ - आगम (शास्त्र)



इ - इत्थी (स्त्री)



ई - ईख (गन्ना)



उ - उदहि (सागर)



ऊ - ऊण (ऊन)



ए - एणग (चश्मा)



ओ - ओं (ओम्)



क - कुक्कुर (कुत्ता)



ख - खीर (दूध)



ग - गुहा (गुफा)



घ - घर (घर)

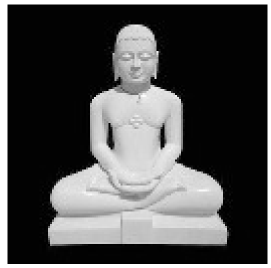


च - चमू (सेना)

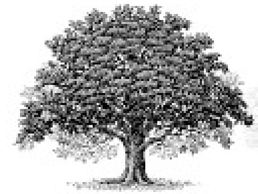
पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)



छ - छत्त (छात्र)



ठ - ठक्कुर (मूर्ति)



त - तरू (वृक्ष)



ज-जंबू (जामुन का पेड़)



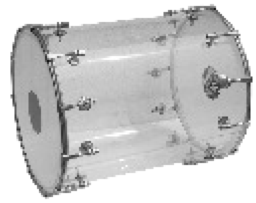
ड-डिंभ (छोटा बच्चा)



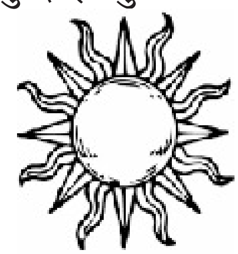
थ-थुदि (स्तुति/प्रार्थना)



झ -झुंपड़ा (झौंपड़ी)



ढ-ढक्का (बड़ा ढोल)



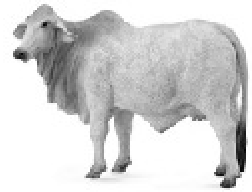
द-दिवायर (सूर्य)



ट - टंक (कुल्हाड़ी)



ण - णर (मनुष्य)



ध-धेणु (गाय)

पागदवण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)



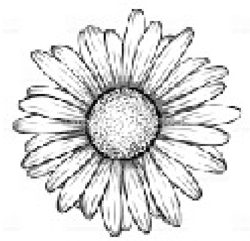
न - नई (नदी)



भ - भमर (भँवरा)



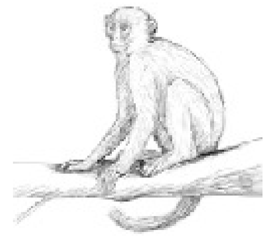
ल - लवण (नमक)



प - पुप्फ (फूल)



म - महिस (भैंसा)



व - वाणर (बंदर)



फ - फल (फल)



य-यमराज (काल,मृत्यु)



स - सप्प (साँप)



ब - बाला (लड़की)



र - रयण (रत्न)



ह - हत्थि (हाथी)

पाठ - 2

पागदभासाए संखा

(प्राकृत भाषा में संख्या, 1 से 50)

1.	एक्क, इक्क, एग, एअ	एक	१
2.	दो, दुवे, वे	दो	२
3.	ति, तिण्णि	तीन	३
4.	चउ, चउरो, चत्तारि	चार	४
5.	पंच	पाँच	५
6.	छट्ठ	छः	६
7.	सत्त	सात	७
8.	अट्ठ	आठ	८
9.	णव	नौ	९
10.	दह, दस	दस	१०
11.	एक्कारह, एगारस	ग्यारह	११
12.	बारह, बारस	बारह	१२
13.	तेरह, तेरस	तेरह	१३
14.	चउद्दह, चउद्दस, चोद्दस	चौदह	१४
15.	पण्णरह, पण्णरस	पन्द्रह	१५
16.	सोलह, सोलस	सोलह	१६
17.	सत्तरह, सत्तरस	सत्तरह	१७
18.	अट्ठारह, अट्ठारस,	अठारह	१८
19.	एगूणवीस, अउणवीस,	उन्नीस	१९
20.	वीस	बीस	२०
21.	एगवीस	इक्कीस	२१
22.	बावीस, बाइस	बाइस	२२
23.	तेवीस	तेईस	२३
24.	चउवीस	चौबीस	२४
25.	पण्णवीस, पणुवीस	पच्चीस	२५
26.	छब्वीस	छब्बीस	२६
27.	सत्तवीस, सत्तावीस	सत्ताईस	२७
28.	अट्ठावीस	अट्ठाईस	२८
29.	एगूणतीस	उनतीस	२९
30.	तीस	तीस	३०
31.	एक्कतीस	इकत्तीस	३१
32.	बत्तीस	बत्तीस	३२
33.	तेत्तीस	तैंतीस	३३
34.	चउतीस	चौंतीस	३४
35.	पण्णतीस, पणतीस	पैंतीस	३५
36.	छत्तीस	छत्तीस	३६
37.	सत्ततीस	सैंतीस	३७
38.	अट्ठतीस	अड़तीस	३८
39.	एगूणचत्तालीस	उनतालीस	३९
40.	चत्तालीस, चालीस	चालीस	४०
41.	एक्कचत्तालीस	इकतालीस	४१
42.	बायालीस	बयालीस	४२
43.	तेआलीस	तैंतालीस	४३
44.	चउआलीस	चौंवालीस	४४
45.	पणयालीस	पैंतालीस	४५
46.	छयालीस	छियालीस	४६
47.	सत्तचत्तालीस	सैंतालीस	४७
48.	अट्ठचत्तालीस	अड़तालीस	४८
49.	एगूणपण्णास	उनचास	४९
50.	पण्णास	पचास	५०

पाठ-3

णमोक्कार महामंत
(णमोकार महामंत्र)

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं अरहंत मंगलं
सिद्ध मंगलं साहू मंगलं
केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंत लोगुत्तमा
सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा
केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि
अरहंत सरणं पव्वज्जामि
सिद्ध सरणं पव्वज्जामि
साहू सरणं पव्वज्जामि
केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ॥

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं॥

पण्ह- णमोक्कारमंते केसिं णमोक्कारो कदो?

प्रश्न- णमोकार में किसको नमस्कार किया है?

उत्तर- णमोक्कारमंते रयणत्तयविसुद्धअप्पाणं णमोक्कारो कदो।

उत्तर- णमोकार मंत्र में रत्नत्रय से विशुद्ध आत्माओं को नमस्कार किया है।

पण्ह- णमोक्कारमंतो काए भासाए अत्थि?

प्रश्न- णमोकार मंत्र किस भाषा में है?

उत्तर- णमोक्कारमंतो पाइय भासाए अत्थि।

उत्तर- णमोकार मंत्र प्राकृत भाषा में है।

पण्ह- णमोक्कारमंते पदं, मत्ता, अक्खरा य केवडिया होंति?

प्रश्न- णमोकार मंत्र में कितने पद, मात्रा और अक्षर होते हैं?

उत्तर- णमोक्कारमंते पंचपदाणि, अट्ठावण्णमत्ताओ, पण्णतीस अक्खरा य होंति।

उत्तर- णमोकार मंत्र में पाँच पद, अट्ठावन मात्रायें और पैंतीस अक्षर हैं।

गुरुदिट्ठीए सेयं गुरुआसीच्छाया कप्परुक्खोव्व।
गुरुवयणं भमहरणं सग्गसुहं गुरुपुच्छिदो हं।।
—अनासक्त महायोगी 2/18

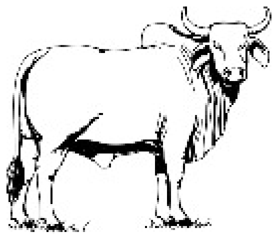
गुरु की दृष्टि में ही कल्याण है,
गुरु आशीष की छाया कल्पवृक्ष के समान है।
गुरु के वचन भ्रम को दूर करने वाले हैं।
गुरु ने मुझे पूछा है, इसमें स्वर्गसुख है।।

पाठ-4

चउवीस तित्थयर णाम

(चौबीस तीर्थंकरों के नाम)

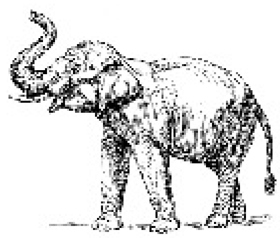
1



उसहणाह - वृषभनाथ

वसह - वृषभ

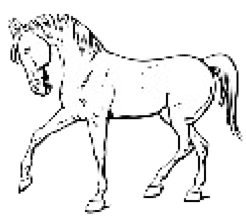
2



अजियणाह - अजितनाथ

हत्थि - हाथी

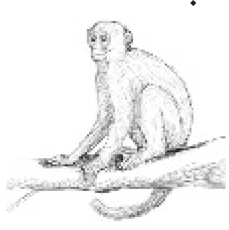
3



संभवणाह - शंभवनाथ

अस्स - घोड़ा

4



अभिणंदणणाह-अभिनंदननाथ

वाणर - बंदर

5



सुमइणाह - सुमतिनाथ

चकवा - चकवा

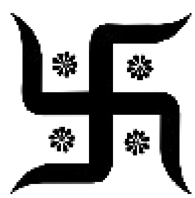
6



पउमप्पह - पद्मप्रभ

लालकमल - लालकमल

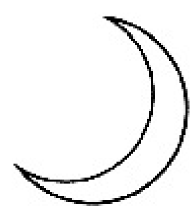
7



सुपासणाह - सुपार्श्वनाथ

सत्थिय - साथिया

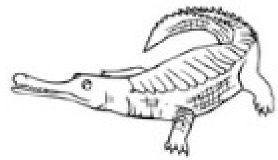
8



चंदप्पह - चंद्रप्रभ

चंदमा - चंद्रमा

9



पुप्फदंतणाह - पुष्पदंतनाथ

मगरमच्छ - मगरमच्छ

10



सीयलणाह - शीतलनाथ

कप्परुक्ख - कल्पवृक्ष

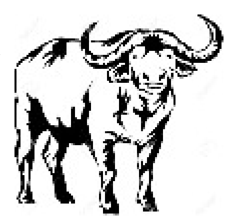
11



सेयंसणाह - श्रेयांसनाथ

गेंडा - गेंडा

12



वासुपुज्जणाह-वासुपूज्यनाथ

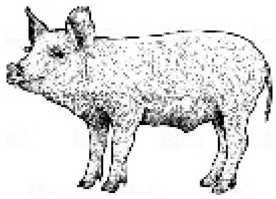
महिस - भैंसा

पाठ-4

चउवीस तित्थयर णाम

(चौबीस तीर्थंकरों के नाम)

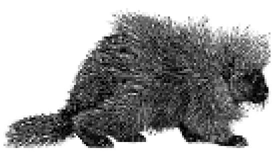
13



विमलणाह - विमलनाथ

सूयर - सूअर

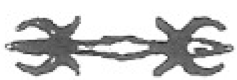
14



अणंतणाह - अनंतनाथ

सेही - सेही

15



धम्मणाह - धर्मनाथ

वज्जदंड - वज्रदण्ड

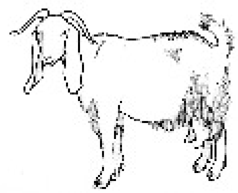
16



संतिणाह - शांतिनाथ

हिरण - हिरन

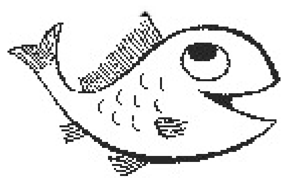
17



कुंथुणाह - कुंथुनाथ

अज - बकरा

18



अरणाह - अरनाथ

मच्छ - मछली

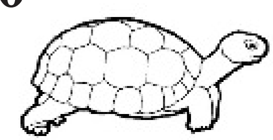
19



मल्लिणाह - मल्लिनाथ

कलस - कलश

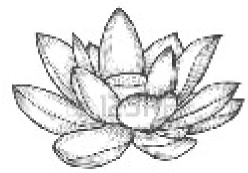
20



मुणिसुव्वयणाह-मुनिसुव्रतनाथ

कच्छव - कछुआ

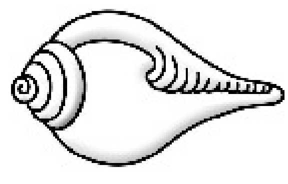
21



णमिणाह - नमिनाथ

णीलकमल - नीलकमल

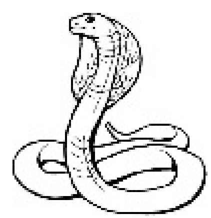
22



णेमिणाह - नेमिनाथ

संख - शंख

23



पासणाह - पार्श्वनाथ

सप्प - सर्प

24



वड्ढमाण - वर्द्धमान

सीह - सिंह

पाठ-5

पाव (पाप)

पण्ह 1.- किं णाम पावाइं होंति

प्रश्न – पाप किसे कहते हैं?

उत्तर- जे असुहा भावा ते पावाइं होंति।

उत्तर – जो अशुभ भाव हैं वे पाप हैं।

पण्ह 2.- पावाइं केत्तियाइं होंति?

प्रश्न – पाप कितने होते हैं?

उत्तर - पावाइं पंच होंति।

उत्तर – पाप पाँच होते हैं।

पण्ह 3.- काइं पावाइं होंति?

प्रश्न – पाप कौन से होते हैं?

उत्तर - हिंसा-मोस-चुरा-कुसील-परिग्गहा एदे पंच पावाइं होंति।

उत्तर – हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह ये पाँच पाप होते हैं।

पण्ह 4. - का णाम हिंसा?

प्रश्न – हिंसा क्या है?**उत्तर - जीववहो हिंसा अत्थि।**

उत्तर – जीव वध हिंसा है।

पण्ह 5. - किं णाम मोसो?

प्रश्न – झूठ क्या है?

उत्तर - असच्चभासणं मोसो होदि।

उत्तर – असत्यभाषण झूठ होता है।

पण्ण 6. - का णाम चुरा?

प्रश्न– चोरी क्या है?

उत्तर -परवत्थुहरणं चुरा अत्थि।

उत्तर – दूसरे की वस्तु का हरण करना चोरी है।

पण्ह 7. - किं णाम कुसीलो होदि?

प्रश्न- कुशील क्या होता है?

उत्तर- परस्स सरीरे रमणं कुसीलो अत्थि।

उत्तर- दूसरे के शरीर में रमण करना कुशील है।

पण्ह 8.- किं णाम परिग्गहो होदि?

प्रश्न- परिग्रह क्या होता है?

उत्तर- परवत्थुसु ममत्तभावो परिग्गहो होदि।

उत्तर- पर वस्तुओं में ममत्व का भाव परिग्रह है।



धम्मस्स पिऊ णाणं माया दया संतुट्ठि जाया य।
संतोसो होदि सुदो धूआ समदा ससा सुमई॥

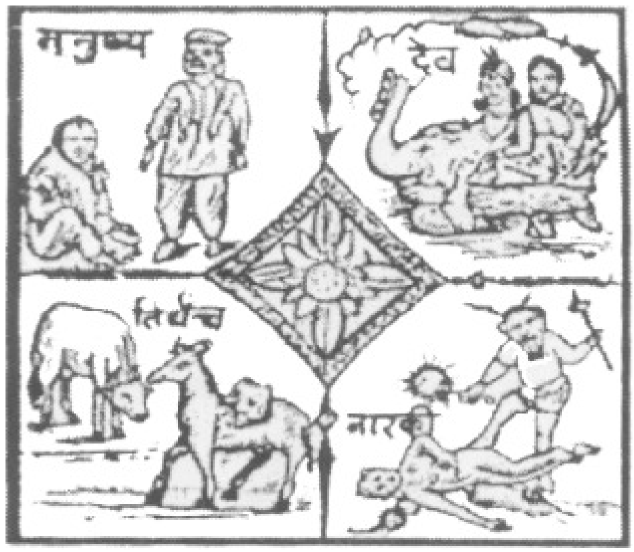
अर्थ- धर्म का पिता ज्ञान है, माता दया है, संतुष्टि पत्नी है, संतोष पुत्र है, समता पुत्री है और सुमति बहिन है।

पावस्स पिऊ लोहो माया हिंसा य ईरिसा जाया।
सट्ठो खलु होदि सुदो धूआ तिण्हा ससा कुमई॥

अर्थ- पाप का पिता लोभ है, माता हिंसा है, ईर्ष्या पत्नी है, स्वार्थ पुत्र है, तृष्णा पुत्री है, बहन कुमति है।

पाठ-6

गई/गदि (गति)



पण्ह 1. – किं णाम गई होदि?

प्रश्न – गति किसे कहते हैं?

उत्तर –मरणोवरंतं आदा जत्थ गच्छइ सा गई अत्थि।

उत्तर – मरने के बाद आत्मा जहाँ जाता है, वह गति है।

पण्ह 2.– गईओ केत्तियाओ होंति?

प्रश्न – गतियाँ कितनी होती हैं?

उत्तर –गईओ चत्तारि होंति।

उत्तर – गतियाँ चार होती हैं।

पण्ह 3.– तास णामाइं किं संति?

प्रश्न – उनके नाम क्या हैं?

उत्तर –णरयगई, तिरिक्खगई, मणुस्सगई, देवगई।

उत्तर – नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति।

अभ्यास-1

क - सर्वनाम शब्द (प्रथमा विभक्ति) **प्रथम पुरुष कर्ता**–सो (वह) (एकवचन), ते (वे दोनों या वे सब) (पुलिंग बहुवचन), सा (वह) (स्त्रीलिंग, एकवचन), ता या ताओ (वे दोनों, वे सब) (स्त्रीलिंग बहुवचन), तं (वह) (नपुंसक लिंग, एकवचन), ताणि (वे सब) (नपुंसकलिंग, बहुवचन)।

ख - संज्ञा शब्द - (पुंलिंग) जिण (जिन), देव (देव), बालअ (बालक), णर (मनुष्य), उसह (वृषभ, आदिनाथ भगवान), धम्म (धर्म), वीर (वीर), विज्जालअ (विद्यालय)

ग - क्रियापद –हस (हँसना), पढ़ (पढ़ना), चल (चलना) लिह (लिखना), गच्छ (जाना), आगच्छ (आना), णिग्गच्छ (निकल जाना)

घ - अव्यय शब्द - अत्थ (यहाँ), तत्थ (वहाँ), जत्थ (जहाँ)

संकेत - पुं. (पुंलिंग), स्त्री, (स्त्रीलिंग), नपुं. (नपुंसकलिंग), एक. (एकवचन), बहु. (बहुवचन)। यह संकेत सभी अभ्यासों में याद रखना है।

व्याकरण - जिण शब्द (अकारान्त पुलिंग)

प्रथमा विभक्तिः (कर्त्ता कारक)	जिणो (एकवचन)	जिणा (बहुवचन)	**संक्षिप्त रूप** (अकारान्त पुलिंग में)
द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)	जिणं	जिणा या जिणे (बहु.)	प्र.–ओ | आ द्वि.–अं | आ, ए

सूचना– इसी तरह संक्षिप्त रूप सभी संज्ञा शब्दों में लगाकर देव से लेकर विज्जालअ तक बनाएँ।

(हस) प्रथम पुरुष–हसदि या हसइ (एकवचन)		**संक्षिप्त रूप**
	हसंति (बहुवचन)	दि या इ (एकवचन)
		न्ति (बहुवचन)

सूचना– इसी तरह संक्षिप्त रूप सभी क्रियापद में लगाकर पढ से लेकर णिग्गच्छ तक के रूप बनाएँ।

नियम 1 - कर्त्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। जैसे 'सो पढदि' यहाँ कर्त्ता (सो) प्रथम पुरुष एकवचन में है तो क्रिया (पढदि) भी प्रथम पुरुष एकवचन में होगी।

नियम 2 - पुंलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग, इन तीनों लिगों के संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ क्रियापद का रूप वही रहता है। जैसे –सा पढदि। तं पढदि।

नियम 3 – कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

नियम 4 – प्राकृत में मात्र दो ही वचन होते हैं – एकवचन और बहुवचन।

नियम 5 – वर्तमानकाल की क्रिया में 'है' या 'रहा है' दोनों प्रयोग होते हैं। जैसे–वह जाता है या जा रहा है। दोनों अर्थ में 'गच्छइ' होगा।

अभ्यास-1

1. प्रयोग देखें-

1. वह पढ़ता है -सो पढदि या सो पढइ।
2. वे दोनों (या वे सब) पढते हैं -ते पढंति।
3. वह यहाँ आती है -सा अत्थ आगच्छइ।
4. वे सब लिखती हैं -ताओ लिहंति।
5. वीर विद्यालय जाता है - वीरो विज्जालअं गच्छइ।
6. वह मनुष्य निकल जाता है - सो णरो ण्गिगच्छइ।
7. बालक जा रहा है - बालओ गच्छइ।
8. वह पढ़ रही है -सा पढइ।

2. अभ्यास करें-

(क) वह हँसता है। वह जाता है। वह आ रहा है। देव जा रहा है। बालक विद्यालय जाता है। वह यहाँ आता है। वह वहाँ लिखता है। वह वहाँ जाती है।

(ख) वे सब विद्यालय जा रहे हैं। वे सब पढ़ते हैं। वे दोनों चलते हैं। मनुष्य आ रहे हैं। वे देव हँस रहे हैं। वे जिन यहाँ आते हैं।

3.

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
1. णरा गच्छइ।	णरा गच्छंति।	1
2. सो अत्थ हसन्ति।	सो अत्थ हसइ।	1
3. देवा विज्जालओ गच्छइ।	देवा विज्जालअं गच्छंति।	1, 3
4. वीरौ लिहन्ति।	वीरा लिहंति।	4

4. शुद्ध वाक्य करो तथा नियम बताओ-

सो पढति, ते हसइ, देवो धम्मो पढइ, सा गच्छ।

5. गृहकार्य-

- ❖ **2** (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ
- ❖ 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ
- ❖ सभी क्रिया पदों के रूप दोनों वचनों में लिखो।

अभ्यास-2

क - सर्वनाम शब्द (प्रथमा विभक्ति)मध्यम पुरुष कर्ता- तुमं (तुम या तू) एकवचन)
तुम्हे (तुम दोनों, तुम सब) (बहुवचन)

सूचना- सभी लिंगों में मध्यम पुरुष के ये ही रूप रहते हैं।

ख - संज्ञा शब्द (नपुं.)- मित्त (मित्र), घर (घर), पोत्थअ (पुस्तक), णयर (नगर), फल (फल), पुप्फ (पुष्प या फूल), खेत्त (खेत, मैदान), सत्थ (शास्त्र), कमल (कमल)

ग - क्रियापद - णम (नमन करना), जाण (जानता है जानना), पास (देखना), पिब (पीना), खेल (खेलना), सय (सोना)

घ - अव्यय पद - सइ (एक बार), मुहु (बार -बार), सया (सदा), ण या णो (नहीं)

व्याकरण

मित शब्द (अकारान्त नपुं.)

प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)	मित्तं (एक.)	मित्ताणि (बहु.)	संक्षिप्त रूप अं.(एक.)
द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)	मित्तं (एक.)	मित्ताणि (बहु.)	अणि (बहु.)

सूचना- घर से कमल तक के रूप इसी प्रकार चलेंगे।

हस - (मध्यम पुरुष) - हससि (एक.),	हसह (बहु.)	संक्षिप्त रूप
णम आदि के रूप भी इसी प्रकार चलेंगे। णमसि, जाणसि,		सि (एक.)
		ह (बहु.)

पाससि, पिबसि, णमह, जाणह आदि।

नियम 6 - तीन पुरुष होते हैं। **(क)** प्रथम (या अन्य) पुरुष अर्थात् वह, वे दोनों, वे सब, किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम भी अन्य पुरुष कहा है। **(ख)** - मध्यम पुरुष अर्थात् तू, तुम, तुम दोनों, तुम सब **(ग)** - उत्तम पुरुष अर्थात् मैं, हम दोनों, हम सब। ये नाम स्मरण कर लें।

नियम 7 - कर्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होगा, उसी के अनुसार क्रिया और वचन होगा। जैसे तुमं पढसि, यहाँ कर्ता मध्यम पुरुष का एकवचन है तो क्रिया भी उसी अनुसार हुई। तुम्हे पढह इत्यादि।

अभ्यास-2

1. प्रयोग देखें–

1. तुम पढ़ते हो – तुमं पढसि।
2. तुम देखते हो – तुमं पाससि।
3. तुम दोनों हँसते हो – तुम्हे हसह।
4. तुम सब नगर को जाते हो – तुम्हे णयरं गच्छह (नि. 3)।
5. तुम शास्त्र पढ़ते हो – तुमं सत्थं पढसि (नि .3)।

2. अभ्यास करें

(क) तुम नमन करते हो। तुम पढ़ती हो। तुम सोती हो। तुम बार-बार देखते हो। तुम सदा लिखते हो।

(ख) तुम दोनों पीते हो। तुम सब हँसती हो। तुम सब सोते हो। तुम सब पुस्तक पढ़ते हो। तुम दोनों पीते हो। तुम सब शास्त्र सदा नहीं पढ़ते हो। तुम सब सदा घर जाते हो। तुम लोग शास्त्र को नमस्कार करते हो।

3.

	अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
1.	तुमं जाणइ।	तुमं जाणसि।	7
2.	तम्हे णयरो गच्छसि।	तुमं णयरं गच्छसि।	3, 7
3.	तुमं आगच्छह।	तुमं आगच्छसि।	7
4.	मित्तं गच्छसि।	मित्तं गच्छइ।	6 क

4. शुद्ध वाक्य करो तथा नियम बताओ-

तुमं पढइ, तुम्हे आगच्छसि, तुमं मुहु सयइ, मित्ताणि खेलहि, तुमं सइ णमह।

5. गृह कार्य-

- ❖ 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन और द्विवचन में प्राकृत में बदलो।
- ❖ 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बदलो।
- ❖ अभ्यास 1 और 2 में बताई गई सभी क्रियाओं के दोनों पुरुषों (अन्य एवं मध्यम) में रूप लिखो।
- ❖ नपुं. के संज्ञा शब्दों (ख) के संक्षिप्त रूप लगाकर दोनों विभक्तियों में रूप बनाएँ।

अभ्यास-3

क - **सर्वनाम शब्द** - (प्रथमा विभक्ति) **उत्तम पुरुष कर्ता**- अहं (मैं) (एक.), अम्हे (हम दोनों, हम सब) (बहु.)
सूचना - सभी लिंगों में उत्तम पुरुष के ये ही रूप रहते हैं।

ख - **संज्ञा शब्द** (स्त्री लिंग) - बाला (लड़की, बालिका), लआ (लता), खमा (क्षमा), सोहा (शोभा), विज्जा (विद्या), लज्जा (लज्जा), कहा (कथा)

ग - **क्रियापद** - जुज्झ (युद्ध करना), जग्ग (जागना), चल (चलना), णच्च (नाचना), घुम (घूमना), जय (जीतना), पणम (प्रणाम करना)

घ - **अव्यय शब्द** - दाणिं (इस समय, अभी), खिप्पं (शीघ्र, जल्दी), पइदिणं (प्रतिदिन), कत्थ (कहाँ), किं (क्या), सणिअं (धीरे)

व्याकरण

बाला शब्द (आकारान्त स्त्रीलिंग)

प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)	बाला (एक.)	बालाओ (बहु.)	**संक्षिप्त रूप-प्रथमा विभक्ति** आ (एक.) ओ (बहु.)
द्वितीया कारक (कर्म कारक)	बालं (एक.)	बालाओ (बहु.)	**द्वितीया विभक्ति** अं (एक.) ओ (बहु.)

सूचना - लआ से कहा तक रूप इसी प्रकार चलेंगे।

हँस - उत्तम पुरुष -हसामि (एक.) हसामो (बहु.) जुज्झ आदि के रूप एवं अभ्यास 1, 2 में दी गई सभी क्रियाओं के रूप इसी प्रकार चलेंगे।	**संक्षिप्त रूप** आमि (एक.) आमो (बहु.)

नियम 8 - प्राकृत में कुल 10 स्वर होते हैं। जिनमें पाँच ह्रस्व स्वर होते हैं और पाँच दीर्घ स्वर होते हैं।

1. ह्रस्व स्वर - अ इ उ ए ओ
2. दीर्घ स्वर - आ ई ऊ ए ओ

इस प्रकार आपने देखा कि ऐ और औ स्वर भी ए और ओ के रूप में ही अभिव्यक्त होते हैं।

प्रयोग - बच्चो! देखो बोली भाषा में भी हम लोग सामान्यतः इन स्वरों का प्रयोग नहीं करते हैं। इसलिए प्राकृत पहले बोली भाषा के रूप में प्रचलित थी और यह जन सामान्य की भाषा थी। जैसे– कैलास, ऐरावनत, ऐनक, शैल। सामान्य रूप से हम बोलते हैं– केलास या कइलास बस यही प्राकृत भाषा है। इसी तरह एरावत या अइरावत, एनक या अइनक, सेल या सइल। बोलो - यौवन, बोलने में आएगा - योवन, यही प्राकृत है।

बोलो - औपचारिक, बोलने में आएगा - ओपचारिक, यही प्राकृत है।

अभ्यास-3

1. **प्रयोग देखें -**
   1. मैं पढ़ता हूँ – अहं पढामि।
   2. हम सब पढ़ती हैं – अम्हे पढामो।
   3. मैं खेलती हूँ – अहं खेलामि।
   4. हम दोनों सोते हैं – अम्हे सयामो।

2. **(क) अभ्यास करें** - मैं धीरे-धीरे लिखता हूँ। मैं इस समय घूम रहा हूँ। मैं कथा लिखता हूँ। मैं लता को जानता हूँ। मैं प्रतिदिन हँसती हूँ। मैं शीघ्र जागता हूँ।

   (ख) हम दोनों कहाँ जा रहे हैं। हम सब क्या देख रहे हैं। हम दोनों लज्जा को जीतते हैं। हम सब वृषभ जिन को प्रणाम करते हैं। हम लोग यहाँ कहाँ घूम रहे हैं।

   (ग) वह इस समय क्या पढ़ता है। देव जिन को प्रणाम करते हैं। वे सब प्रतिदिन कहाँ घूमते हैं। तुम सब शीघ्र जागते हो। मैं यहाँ-वहाँ घूम रहा हूँ।

3.

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
1. अहं ण लिखामो।	अहं ण लिखामि।	7
2. अहं तत्थ खेलामो।	अहं तत्थ खेलामि।	7
3. अम्हे किं पाससि।	अम्हे किं पासामो।	7
4. अम्हे उसहं जिणं णमंति।	अम्हे उसहं जिणं णमामो।	7

4. **शुद्ध करो तथा नियम बताओ-**

अहं जुज्झसि, तुम्हे जग्गामो, अम्हे पुप्फं पासइ।

5. **गृह कार्य-**

❖ 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाओ

❖ 2 (ख) के वाक्यों को एक वचन में बनाओ

❖ (ग) क्रियापद के तीनों पुरुषों में पूरे रूप लिखो।

❖ लआ से कहा तक दोनों विभक्ति में रूप लिखो।

कर्ता सारिणी - 1
(प्रथम पुरुष)

क्र.सं.	कर्ता नाम	अर्थ	पुरुष	वचन	लिंग
1.	सो	वह	प्रथम	एकवचन	पुल्लिंग
2.	सा	वह	प्रथम	एकवचन	स्त्रीलिंग
3.	तं	वह	प्रथम	एकवचन	नपुंसकलिंग
4.	ते	वे दोनों/वे सब	प्रथम	बहुवचन	पुल्लिंग
5.	ता/ताओ	वे दोनों/वे सब	प्रथम	बहुवचन	स्त्रीलिंग
6.	ताणि	वे सब	प्रथम	बहुवचन	नपुंसकलिंग
7.	बालओ	बालक	प्रथम	एकवचन	पुल्लिंग
8.	बाला	बहुत से बालक	प्रथम	बहुवचन	पुल्लिंग
9.	बाला	बालिका	प्रथम	एकवचन	स्त्रीलिंग
10.	बालाओ	बहुत सी बालिका	प्रथम	बहुवचन	स्त्रीलिंग
11.	पोत्थअ	एक पुस्तक	प्रथम	एकवचन	नपुंसकलिंग
12.	पोत्थाणि	बहुत सी पुस्तकें	प्रथम	बहुवचन	नपुंसकलिंग

कर्ता सारिणी - 2
(मध्यम पुरुष)

क्र.सं.	कर्ता नाम	अर्थ	पुरुष	वचन
1.	तुमं	तुम / तू	मध्यम	एकवचन
2.	तुम्हे	तुम दोनों/तुम सब	मध्यम	बहुवचन

कर्ता सारिणी - 3
(उत्तम पुरुष)

क्र.सं.	कर्ता नाम	अर्थ	पुरुष	वचन
1.	अहं	मैं	उत्तम	एकवचन
2.	अम्हे	हम दोनों/हम सब	उत्तम	बहुवचन

क्रियापद सारिणी - 1
(लट् लकार, प्रथम पुरुष)

उदाहरण - हस+दि/इ जुड़कर हसदि/हसइ प्रथमपुरुष एकवचन में बनता है।
हस+न्ति जुड़कर हसंति प्रथमपुरुष बहुवचन में बनता है।
इसी प्रकार निम्न क्रियाओं के रूप भी प्रथमपुरुष एकवचन एवं बहुवचन में बनते हैं।

क्र.सं.	धातु नाम	अर्थ	एकवचन	बहुवचन
1.	पढ	पढ़ना	पढदि/पढइ	पढंति
2.	चल	चलना	चलदि/चलइ	चलंति
3.	लिह	लिखना	लिहदि/लिहइ	लिहंति
4.	गच्छ	जाना	गच्छदि/गच्छइ	गच्छंति
5.	आगच्छ	आना	आगच्छदि/आगच्छइ	आगच्छंति
6.	णिग्गच्छ	निकल जाना	णिग्गच्छदि/णिग्गच्छइ	णिग्गच्छंति
7.	णम	नमन करना	णमदि/णमइ	णमंति
8.	जाण	जानना	जाणदि/जाणइ	जाणंति
9.	पास	देखना	पासदि/पासइ	पासंति
10.	पिब	पीना	पिबदि/पिबइ	पिबंति
11.	खेल	खेलना	खेलदि/खेलइ	खेलंति
12.	सय	सोना	सयदि/सयइ	सयंति
13.	जुज्झ	युद्ध करना	जुज्झदि/जुज्झइ	जुज्झंति
14.	जग्ग	जागना	जग्गदि/जग्गइ	जग्गंति
15.	णच्च	नाचना	णच्चदि/णच्चइ	णच्चंति
16.	घुम	घूमना	घुमदि/घुमइ	घुमंति
17.	जय	जीतना	जयदि/जयइ	जयंति
18.	पणम	प्रणाम करना	पणमदि/पणमइ	पणमंति
19.	ठा	ठहरना	ठादि/ ठाइ	ठंति
20.	हो	होना	होदि/होइ	होंति

क्रियापद सारिणी - 2
(लट् लकार मध्यम पुरुष)

उदाहरण - जैसे हस+सि जुड़कर हससि मध्यमपुरुष एकवचन में बनता है।
हस+ह जुड़कर हसह मध्यमपुरुष बहुवचन में बनता है।
इसी प्रकार निम्न क्रियाओं के रूप भी मध्यमपुरुष एकवचन एवं बहुवचन में बनते हैं।

क्र.सं.	**धातु नाम**	**अर्थ**	**एकवचन**	**बहुवचन**
1.	पढ	पढ़ना	पढसि	पढह
2.	चल	चलना	चलसि	चलह
3.	लिह	लिखना	लिहसि	लिहह
4.	गच्छ	जाना	गच्छसि	गच्छह
5.	आगच्छ	आना	आगच्छसि	आगच्छह
6.	णिग्गच्छ	निकल जाना	णिग्गच्छसि	णिग्गच्छह
7.	णम	नमन करना	णमसि	णमह
8.	जाण	जानना	जाणसि	जाणह
9.	पास	देखना	पाससि	पासह
10.	पिब	पीना	पिबसि	पिबह
11.	खेल	खेलना	खेलसि	खेलह
12.	सय	सोना	सयसि	सयह
13.	जुज्झ	युद्ध करना	जुज्झसि	जुज्झह
14.	जग्ग	जागना	जग्गसि	जग्गह
15.	णच्च	नाचना	णच्चसि	णच्चह
16.	घुम	घूमना	घुमसि	घुमह
17.	जय	जीतना	जयसि	जयह
18.	पणम	प्रणाम करना	पणमसि	पणमह
19.	ठा	ठहरना	ठासि	ठाह
20.	हो	होना	होसि	होह

क्रियापद सारिणी - 3
(लट् लकार, उत्तम पुरुष)

उदाहरण - हस+आमि जुड़कर हसामि उत्तमपुरुष एकवचन में बनता है।
हस+आमो जुड़कर हसामो उत्तमपुरुष बहुवचन में बनता है।
इसी प्रकार निम्न क्रियाओं के रूप भी उत्तमपुरुष एकवचन एवं बहुवचन में बनते हैं।

क्र.सं.	धातु नाम	अर्थ	एकवचन	बहुवचन
1.	पढ	पढ़ना	पढामि	पढामो
2.	चल	चलना	चलामि	चलामो
3.	लिह	लिखना	लिहामि	लिहामो
4.	गच्छ	जाना	गच्छामि	गच्छामो
5.	आगच्छ	आना	आगच्छामि	आगच्छामो
6.	णिग्गच्छ	निकल जाना	णिग्गच्छामि	णिग्गच्छामो
7.	णम	नमन करना	णमामि	णमामो
8.	जाण	जानना	जाणामि	जाणामो
9.	पास	देखना	पासामि	पासामो
10.	पिब	पीना	पिबामि	पिबामो
11.	खेल	खेलना	खेलामि	खेलामो
12.	सय	सोना	सयामि	सयामो
13.	जुज्झ	युद्ध करना	जुज्झामि	जुज्झामो
14.	जग्ग	जागना	जग्गामि	जग्गामो
15.	णच्च	नाचना	णच्चामि	णच्चामो
16.	घुम	घूमना	घुमामि	घुमामो
17.	जय	जीतना	जयामि	जयामो
18.	पणम	प्रणाम करना	पणमामि	पणमामो
19.	ठा	ठहरना	ठाामि	ठामो
20.	हो	होना	होमि	होमो

शब्दरूप (संज्ञा एवं सर्वनाम)

1. जिण = जिन / जिनेन्द्र भगवान् (अकारान्त, पुंलिंग)

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	जिणो	जिणा
द्वितीया	जिणं	जिणा / जिणे
तृतीया	जिणेण	जिणेहिं
चतुर्थी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
पंचमी	जिणत्तो	जिणाहिंतो
षष्ठी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
सप्तमी	जिणे, जिणम्मि	जिणेसु
संबोधन	हे जिण	हे जिणा

2. मित्त = मित्र (अकारान्त, नपुंसकलिंग)

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	मित्तं	मित्ताणि
द्वितीया	मित्तं	मित्ताणि
तृतीया	मित्तेण	मित्तेहिं
चतुर्थी	मित्तस्स	मित्ताण, मित्ताणं
पंचमी	मित्तत्तो	मित्ताहिंतो
षष्ठी	मित्तस्स	मित्ताण, मित्ताणं
सप्तमी	मित्तम्मि, मित्ते	मित्तेसु
संबोधन	हे मित्त	हे मित्ताणि

3. बाला = बालिका (आकारान्त, स्त्रीलिंग)

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	बाला	बालाओ
द्वितीया	बालं	बालाओ
तृतीया	बालाए	बालाहिं
चतुर्थी	बालाअ	बालाण
पंचमी	बालत्तो	बालाहिंतो
षष्ठी	बालाअ	बालाण, बालाणं
सप्तमी	बालाए	बालासु
संबोधन	हे बाला	हे बालाओ

4. अहं = मैं (सर्वनाम शब्द)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहं	अम्हे
द्वितीया	ममं	अम्हे
तृतीया	मए	अम्हेहि
चतुर्थी	मज्झ	अम्हाण / अम्हाणं
पंचमी	ममाओ	अम्हाहिंतो
षष्ठी	मज्झ	अम्हाण / अम्हाणं
सप्तमी	अम्हम्मि	अम्हेसु

5. तुमं = तुम (सर्वनाम शब्द)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुमं	तुम्हे
द्वितीया	तुमं	तुम्हे
तृतीया	तुमए	तुम्हेहि
चतुर्थी	तुज्झ	तुम्हाण / तुम्हाणं
पंचमी	तुमाओ	तुम्हाहिंतो
षष्ठी	तुज्झ	तुम्हाण / तुम्हाणं
सप्तमी	तुम्हम्मि	तुम्हेसु

क्रियापद रूप

1. हस = हँसना (वर्तमान काल)

	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	हसइ	हसंति
मध्यम पुरुष	हससि	हसह
उत्तम पुरुष	हसामि	हसामो

2. ठा - ठहरना, रुकना (वर्तमान काल)

	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	ठाइ	ठंति
मध्यम पुरुष	ठासि	ठाह
उत्तम पुरुष	ठामि	ठामो

3. हो - होना, होता है (वर्तमान काल)

	एकवचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	होइ	होंति
मध्यम पुरुष	होसि	होह
उत्तम पुरुष	होमि	होमो

संज्ञा शब्दज्ञान

1. अकारान्त पुल्लिंग शब्द

जिण	–	जिन, जिनेन्द्र देव
देव	–	देव
बालअ	–	बालक
णर	–	नर, मनुष्य
उसह	–	वृषभ, आदिनाथ भगवान
धम्म	–	धर्म
वीर	–	वीर, महावीर भगवान
विज्जालअ	–	विद्यालय
केलास	–	कैलाश पर्वत
एरावद	–	ऐरावत हाथी
सेल	–	शैल, चट्टान, पर्वत
एणग	–	चश्मा, ऐनक
छत्त	–	छात्र
पुरिस	–	पुरुष
सीस	–	शिष्य
गब्भ	–	गर्भ
मेह	–	मेघ
सायर	–	सागर
गंथ	–	ग्रन्थ, शास्त्र, पुस्तक
अप्पाण	–	आत्मा
अरिहंत	–	अरिहंत
सिद्ध	–	सिद्ध
आइरिअ	–	आचार्य
उवज्झाअ	–	उपाध्याय
वीयराअ	–	वीतराग
जम्म	–	जन्म
राय	–	राजा

2. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

मित्त	–	मित्र
घर	–	घर
पोत्थअ	–	पुस्तक
णयर	–	नगर
फल	–	फल
पुप्फ	–	पुष्प
खेत्त	–	खेत, क्षेत्र, मैदान
सत्थ	–	शास्त्र
कमल	–	कमल, फूल
जोव्वण	–	यौवन
णाण	–	ज्ञान
सुह	–	सुख
कज्ज	–	कार्य
धण	–	धन
दुक्ख	–	दुःख
रूव	–	रूप
मसाण	–	मरघट
वत्थ	–	वस्त्र
कम्म	–	कर्म
वेरग्ग	–	वैराग्य
चरित्त	–	चारित्र
सिद्धंत	–	सिद्धान्त
भोयण	–	भोजन

3. आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

बाला	–	लड़की, बालिका
लआ	–	लता
खमा	–	क्षमा
सोहा	–	शोभा
विज्जा	–	विद्या
लज्जा	–	लज्जा, लाज
कहा	–	कथा
माआ	–	माता
तिसा	–	तृषा, प्यास
संझा	–	संध्या
णिसा	–	निशा, रात्रि
सद्धा	–	श्रद्धा
सिक्खा	–	शिक्षा
आणा	–	आज्ञा

क्रियापद ज्ञान (अकारान्त)

1.	हस (अक.)	–	हँसना
2.	पढ (सक.)	–	पढना
3.	लिह (सक.)	–	लिखना
4.	गच्छ (सक.)	–	जाना
5.	आगच्छ (सक.)	–	आना
6.	णिग्गच्छ (सक.)	–	निकल जाना
7.	णम (सक.)	–	नमन करना
8.	जाण (सक.)	–	जानना
9.	पास (सक.)	–	देखना
10.	पिब (सक.)	–	पीना
11.	खेल (अक.)	–	खेलना
12.	सय (अक.)	–	सोना
13.	जुज्झ (अक.)	–	युद्ध करना
14.	जग्ग (अक.)	–	जागना
15.	चल (अक.)	–	चलना

सकर्मक – जिस क्रिया से मन में प्रश्न उठे कि मैं क्या करता हूँ वह सकर्मक क्रिया है।
अकर्मक – जिस क्रिया से मन में प्रश्न न उठे कि मैं क्या करता हूँ वह अकर्मक क्रिया है।

क्रिया विशेषण

क्रिया में किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करने वाले शब्द क्रिया-विशेषण होते हैं। क्रियाविशेषणों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय

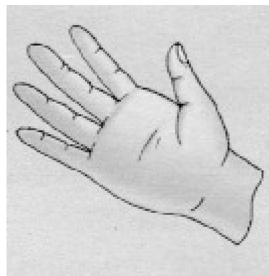
अत्थ	= यहाँ
तत्थ	= वहाँ
कत्थ	= कहाँ
सव्वत्थ	= सब जगह में
अण्णत्त	= दूसरी जगह में
इह	= यहाँ
कदो	= कहाँ से
इदो	= यहाँ से
कहिं	= कहाँ
जत्थ	= जहाँ
सव्वदो	= सब ओर से
उवरिं/अवरिं/अवरि/उवरि	= ऊपर
अह / अहे / अहत्ता	= नीचे
पच्छा	=पिछला भाग/पश्चात्
अग्गओ	= आगे / सामने
पुरओ	= आगे
बहिया/बहि/बहिं/बहित्ता	= बाहर
दूरं	= दूर
अंतो	= भीतर
समया	= पास
अभितो/अभिदो	= चारों ओर से

सरीरस्स अंगाणं णामाइं

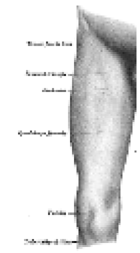
(शरीर के अंगों के नाम)



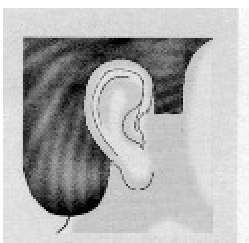
जिह्व – जीभ



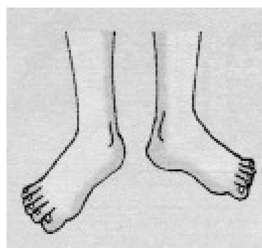
हत्थ – हाथ



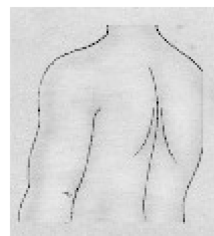
जंघा – जंघा



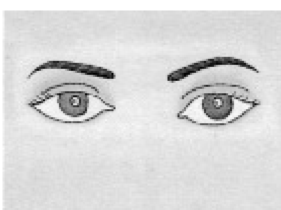
कण्ण – कान



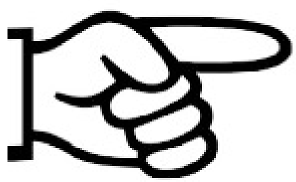
पाद – पैर



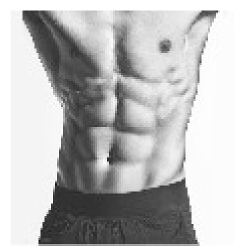
कटि – कमर



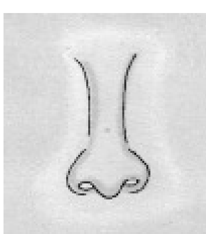
चक्खू – आँख



अंगुलि – अंगुली



उदर – पेट



णासिया – नाक



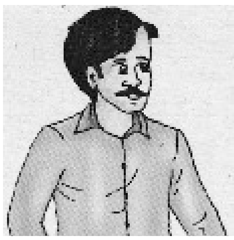
सिर – सिर



कंठ – गला

संबंधवाचग-णामाइं

(सम्बन्धवाचक नाम)



पइ – पति



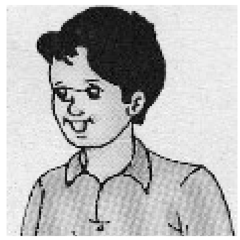
भज्जा – पत्नी



पिउ/पिअर – पिता



माया/माआ – माता



भाउ – भाई



भगिणी – बहिन



पुत्त – पुत्र



पुत्ती – पुत्री



पिआमह – दादा



पिआमही – दादी



माउल – मामा



माउली – मामी

प्राकृत जैन विद्या पाठशाला समिति (रजि.), रेवाड़ी (हरियाणा)

1008 श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, नसियां जी मन्दिर, निकट जैन हाई स्कूल, सरकुलर रोड, रेवाड़ी (हरियाणा)

मोबाइल : - 9416426659, 9784601548, 9729312152

E-mail : prakratvidyapathshala@gmail.com, Website : www.pranamyasagar.in

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम

फोटो

शाखा...

-: प्रवेश-आवेदन पत्र :-

1. आवेदन कर्ता : ....
2. पिता/पति का नाम : ....
3. जन्म-तिथि एवं स्थान : ....
4. लौकिक शिक्षा (प्रमाण पत्र संलग्न करें) : ....
5. धार्मिक शिक्षा : ....
6. पत्राचार का पता : ....
7. स्थाई पता : ....

   (मो.नं. एवं ई-मेल सहित) : ....

   : ....

विशेष सूचना : यदि आप सामाजिक या विद्यालय स्तर पर मन्दिर या विद्यालय में **''प्राकृत विद्या''** बच्चों, महिलाओं, पुरुषों को पढ़ाने के इच्छुक हैं तो **''प्राकृत विद्या पाठशाला''** के माध्यम से आप **प्राकृत जैन विद्या पाठशाला समिति, रेवाड़ी (हरियाणा)** के सहयोग से सुचारू रूप से चला सकते हैं।

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के प्रवेश एवं प्रक्रिया की अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

डॉ० अजेश जैन शास्त्री	**ऋषभ जैन शास्त्री**	**श्रीमती नेहा जैन**
रेवाड़ी (हरियाणा)	**गांधी नगर, रेवाड़ी**	**बल्लूवाड़ा, रेवाड़ी**
मो. नं. 9784601548	मो. नं. 9996266400	मो. नं. 9729312152